Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

नगरीय समाज में अपराध और सामाजिक विचलन

डॉ. मीनाक्षी मीना

सह आचार्य समाजशास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राजस्थान

शोध सारांश

नगरीकरण आधुनिक समाज की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसने आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। नगरों के विस्तार के साथ-साथ अपराध और सामाजिक विचलन की समस्याएँ भी बढ़ी हैं। सामाजिक विचलन उन व्यवहारों को कहा जाता है जो समाज द्वारा स्वीकृत मानदंडों और मूल्यों के विरुद्ध होते हैं। नगरीय समाज में बेरोज़गारी, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि, सामाजिक असमानता, पारिवारिक विघटन तथा आधुनिक जीवनशैली अपराध और विचलन को बढ़ावा देते हैं। यह शोध पत्र नगरीय समाज में अपराध एवं सामाजिक विचलन के स्वरूप, कारण, प्रभाव तथा नियंत्रण के उपायों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

नगरीय वृद्धि एवं विकास से जुड़ी हुई समस्याओं में आज जिन तीन समस्याओं को सबसे अधिक गम्भीर माना जाता है उनका सम्बन्ध नगर की गन्दी बस्तियों, अपराधी व्यवहारों में वृद्धि तथा पर्यावरण से है । इन तीनों समस्याओं का सम्बन्ध किसी-न-किसी रूप में नगरीय स्थल के एक विशेष प्रतिमान, व्यक्तिवादिता पर आधारित सम्बन्धों तथा नगरों की भौतिक संस्कृति में होने वाली वृद्धि से है । यह सच है कि भारत और दुनिया के अनेक दूसरे देशों में नगरों का इतिहास बहुत प्राचीन है लेकिन आरम्भिक नगरों एवं वर्तमान नगरों की बसाहट के प्रतिमानों, उपभोग के तरीकों तथा मूल्यगत संरचना में एक भारी अन्तर देखने को मिलता है । भारत में परम्परागत नगरों की स्थापना व्यापारिक, सैनिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हुई। ऐसे नगरों का आकार तुलनात्मक रूप से छोटा था तथा जिस स्थान पर उपजाऊ भूमि तथा पानी की सुविधाएं उपलब्ध होती थीं वहीं जनसंख्या का केन्द्रीकरण बढ़ने से नगर के आकार में भी सामान्य वृद्धि होने लगती थी। ऐसे नगरों की संरचना नदी के तट से हटकर एक लम्बी कतार के रूप में होती थी तथा विभिन्न आवासीय क्षेत्र साधारणतया एक विशेष मार्ग में ही जुड़े रहते थे ।

मुख्य शब्द: नगरीय समाज, अपराध ,विचलन, गन्दी बस्तियॉ, प्रदूषण, सामान्तवादी व्यवस्था, सामाजिक नियंत्रण, बेरोज़गारी

प्रस्तावना

भारत सहित विश्व के अनेक देशों में नगरीकरण तीव्र गति से बढ़ रहा है। औद्योगिकीकरण और आधुनिक विकास के कारण लोग रोजगार, शिक्षा तथा बेहतर जीवन की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इससे नगरों की जनसंख्या बढ़ रही है और सामाजिक संरचना में परिवर्तन हो रहा है। नगरीय जीवन में व्यक्तिवाद, प्रतिस्पर्धा और भौतिकवाद अधिक देखने को मिलता है। सामाजिक संबंध अपेक्षाकृत कमजोर होते हैं, जिसके कारण सामाजिक नियंत्रण की शक्ति कम हो जाती है। परिणामस्वरूप अपराध, नशाखोरी, चोरी, हिंसा, साइबर अपराध, बाल अपराध तथा अन्य विचलनकारी व्यवहारों में वृद्धि होती है। संसार के अधिकांश देशों में कुछ समय पहले तक एक राजतन्त्रात्मक और सामान्तवादी व्यवस्था का प्रचलन होने के कारण एक ओर राज्य-शक्ति का संचालन किसी प्रमुख नगर से ही होता था जबकि विभिन्न नगर-राज्यों (City states) के बीच निरन्तर संघर्ष चलते रहने के कारण नगर से भिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन में असुरक्षा भी बढ़ने लगी । यूरोप में पुनर्जागरण के बाद जब राजशाही की जगह लोकतान्त्रिक व्यवस्था की स्थापना हुई तो एक ओर नगर - राज्यों का स्थान राष्ट्र-राज्यों (Nation states) ने ले लिया तो दूसरी ओर नगरों का राजनीतिक, प्रशासनिक और शैक्षणिक महत्व बढ़ जाने के कारण एक बड़ी संख्या में लोगों ने ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवास करना आरम्भ कर दिया। यहीं से नगरीय स्थलों अथवा नगर के आकार में वृद्धि होना आरम्भ हो गयी । मर्टन ने यह स्पष्ट किया है कि जैसे-जैसे किसी समूह या समुदाय के आकार में वृद्धि होती है उससे सम्बन्धित विभिन्न संस्थाओं के प्रकार्यों में भी परिवर्तन होने लगता है । इसके फलस्वरूप अनेक संस्थाओं के प्रकार्यों में इस तरह परिवत्रन होने लगता है कि वे अकार्य (disfunction) के रूप में बदलने लगते हैं। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण व्यवहार के स्वीकृत तरीकों का समूह की प्रत्याशाओं से भिन्न व्यवहारों के रूप में बदलना है। इसी दशा को मर्टन ने विचलन अथवा विपथगमन (deviance) की अवधारणा के द्वारा किया। नगरीय स्थलों अथवा क्षेत्रों में विचलन की इस दशा को समझने से पहले विचलन की अवधारणा से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों को समझना आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य

1. नगरीय समाज में अपराध और सामाजिक विचलन की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. नगरीय अपराध के प्रमुख कारणों का अध्ययन करना।
3. सामाजिक विचलन के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
4. अपराध नियंत्रण और सामाजिक सुधार के उपाय सुझाना।

विचलन की अवधारणा

समाज में व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वह समूह की प्रत्याशाओं, अपनी प्रस्थिति तथा कानूनों अनुसार व्यवहार करे। एक सरल समाज में व्यक्ति अपनी भूमिका का निर्वाह एक नैतिक कर्तव्य के रूप में करता है, लेकिन

जैसे-जैसे कोई समाज जटिल होता जाता है, व्यक्ति के निजी स्वार्थ उसे ऐसा करने की प्रेरणा देने लगते हैं जो या तो समाज द्वारा मान्य नहीं होते अथवा जिनके लिए अपनाए जाने वाले साधनों की समाज अनुमति नहीं देता। इसका तात्पर्य है कि जब किसी व्यक्ति या समूह द्वारा समाज के नियमों, कानूनों अथवा सामाजिक प्रतिमानों का जानबूझकर उल्लंघन करके अपने हितों को पूरा करने का प्रयत्न किया जाता है तब सामान्य शब्दों में इसी दशा को हम विचलन, विपथगमन या विसामान्यता कहते हैं । इस अर्थ में विचलन वह दशा है जो अनुरूपता (conformity) के विपरीत होती है। विचलन नगरीय समाजशास्त्र से सम्बन्धित एक प्रमुख अवधारणा है जिसके सन्दर्भ में नगरीय समाजों में सामाजिक नियन्त्रण एवं सामाजिक व्यवस्था की प्रकृति को समझा जा सकता है । विभिन्न समाजशास्त्रियों ने विचलन की दशा को इसी सन्दर्भ में परिभाषित किया है।

जॉन्सन (H. Johnson) ने लिखा है, "विचलित व्यवहार केवल किसी सामाजिक मानदण्ड अथवा आदर्श नियम का उल्लंघन करना ही नहीं है बल्कि यह एक ऐसा व्यवहार है जिसमें नियमों का जानबूझकर उल्लंघन किया जाता है। "

कोहन (Albert Cohen) के अनुसार, "विचलन का तात्पर्य प्रत्येक उस व्यवहार से होता है जो सामान्य रूप से स्वीकृत आचरणों के उल्लंघन के रूप में होते हैं ।" इस अर्थ में सामाजिक विचलन का क्षेत्र बहुत व्यापक है। तस्करी, गवन, वस्तुओं में मिलावट, वेश्वावृत्ति, आत्महत्या तथा हिंसा से सम्बन्धित सभी व्यवहार विचलन के अन्तर्गत आते हैं।

क्लिनार्ड (M.B. Clinard) के अनुसार, "विचलन का सम्बन्ध उन दशाओं से है जिनमें व्यक्ति का व्यवहार एक सामान्य दिशा की ओर इस सीमा तक होता है जो समुदाय की सहनशीलता की सीमा से बाहर हो । "

दुर्खीम ने अपनी पुस्तक '*The Suicide* ' में विचलन की अवधारणा को एक ऐसी दशा के रूप में स्पष्ट किया जो किसी समाज में तेजी से होने वाले परिवर्तन के दौरान उत्पन्न होती है। इस सन्दर्भ में उन्होंने विचलन को सामाजिक संरचना में पैदा होने वाले एक तनाव तथा विघटनकारी दशा के रूप में स्पष्ट किया ।

रॉबर्ट के मर्टन (Robert Merton) ने विचलन की व्याख्या सामाजिक संरचना के सन्दर्भ में की। उनके अनुसार समाज की विभिन्न उप-संरचनाओं में दो तत्वों का विशेष महत्व होता है— एक ओर वे लक्ष्य और पुरस्कार हैं जिन्हें महत्वपूर्ण मानते हुए समाज द्वारा उन्हें मान्यता दी जाती है। दूसरी ओर समाज द्वारा व्यवहार कुछ ऐसे तरीके अथवा साधन निर्धारित किए जाते हैं जिनके द्वारा व्यक्ति उन लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। अनेक दशाओं के फलस्वरूप कुछ व्यक्ति जव समाज द्वारा स्वीकृत साधनों के द्वारा सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाते, तो वे समाज द्वारा मान्यता प्राप्त नियमों का उल्लंघन करके भी उन लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाते, तो वे समाज द्वारा मान्य प्राप्त नियमों का उल्लंघन करके भी उन लक्ष्यों को पाने का प्रयत्न करने लगते हैं जिससे उन्हें एक ऊंची प्रस्थिति और तरह-तरह की सुख-सुविधाएं प्राप्त हो सकें । मर्टन के अनुसार इसी दशा को हम सामाजिक विचलन कहते हैं। उदाहरण के लिए, वैध और नैतिक साधनों के द्वारा सम्पत्ति को अर्जित करना एक सामाजिक लक्ष्य है । जो व्यक्ति वैध तरीकों के द्वारा इस लक्ष्य को पाने में असफल रहते हैं, वे अक्सर विभिन्न प्रकार के

अपराधों, भ्रष्ट व्यवहारों एवं सामाजिक मूल्यों से भिन्न व्यवहार करके सम्पत्ति अर्जिज करना आरम्भ कर देते हैं। यही सामाजिक विचलन की दशा है।

विचलन के विभिन्न रूप

हार्टन एवं हण्ट (Harton and Hunt) ने विचलन के तीन मुख्य रूपों को स्पष्ट किया - 1. सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक विचलन, 2. व्यक्तिगत एवं समूह विचलन, 3. प्राथमिक तथा द्वितीयक विचलन।

सांस्कृतिक विचलन वह है जिसमें व्यक्ति अनेक मानसिक दुर्बलताओं अथवा स्नायुविक दोषों के कारण अपने सांस्कृतिक प्रतिमानों से भिन्न व्यवहार करने लगता है । इसी कारण इसे मनोवैज्ञाकि विचलन भी कहा जाता है। व्यक्तिगत विचलन का तात्पर्य किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अपनी उप-संस्कृति के प्रतिमानों से विचलित होना है। मादक द्रव्यों का सेवन अथवा यौनिक प्रतिमानों का उल्लंघन करना इसका उदाहरण है । समूह विचलन का सम्बन्ध एक ऐसी दशा से है जिसमें व्यक्ति अपने हितों को पूरा करने के लिए समाज द्वारा अस्वीकृत एक अलग उप-संस्कृति को विकसित कर लेता है। तस्करी या अपराधी कार्यों के लिए एक विशेष गिरोह को संगठित करना इसी तरह का विचलित व्यवहार है। प्राथमिक तथा द्वितीयक विचलन का उल्लेख सबसे पहले एडविन लेमर्ट ने अपनी पुस्तक 'सोशल पैथोलॉजी' में किया था जिसे हार्टन तथा हण्ट ने उसी रूप में स्वीकार - कर लिया। प्राथमिक विचलन वह है जो इच्छित या नियोजित नहीं होता बल्कि कुछ विशेष परिस्थितियों या व्यक्तिगत लापरवाही का परिणाम होता है। देरी के कारण रेल का टिकट लेने की असमर्थता होने पर विना टिकट यात्रा करना अथवा मामूली उत्तेजना के कारण किसी पर साधारण आघात कर बैठना प्राथमिक विचलन का उदाहरण है। द्वितीयक विचलन एक ऐसी दशा है जिसमें व्यक्ति जानबूझकर सामाजिक प्रतिमानों अथवा कानूनों का उल्लंघन करता है तथा भविष्य में भी अपने आपको उस दशा से अलग नहीं कर पाता। ऐसे विचलन के लिए समाज द्वारा समूह - बहिष्कार से लेकर कारावास तक का कठिन दण्ड देने की व्यवस्था की जाती है।

डिनित्ज ने विचलन की सीमा तथा विचलन की दशाओं को ध्यान में रखते रखते हुए विचलित व्यक्ति के पांच रूपों का उल्लेख किया - 1. सनकी (Crazy), 2. विधर्मी अथवा पापी (Sinner or Apostate), 3. मनोरोगी (Psychosis), 4. अलगाववादी (Alienated) 5. अपराधी (Criminal) | सनकी व्यक्ति वे होते हैं जिनकी बुद्धि का स्तर निम्न होने के कारण उनके व्यवहारों में एक असामान्यता देखने को मिलती है। धार्मिक मूल्यों तथा नियमों को अस्वीकार करके उनका उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को विधर्मी विचलक कहा जाता है । मनोरोगी विचलक वे व्यक्ति होते हैं जिनमें किसी मानसिक बीमारी के कारण प्रतिशोध, पलायन या अनैतिकता की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। चौथी श्रेणी उन अलगाववादियों की है जो समाज में अपने आपको अकेला और शक्तिहीन महसूस करते हैं। आधुनिक संस्कृति में जब व्यक्ति अपने आपको सामाजिक संरचना से अथवा तिरस्कृत पाता है तो उसमें अलगाववाद से सम्बन्धित विचलन बढ़ने लगता है। सामान्य जन-जीवन से भिन्न हिप्पी जैसे आचरण करने वाले व्यक्ति इसी के अन्तर्गत आते हैं। अपराधी व्यक्ति वे हैं जो जानबूझकर कानूनों का उल्लंघन करते हैं तथा धीरे-धीरे अभ्यस्त अपराधी बन

जाते हैं। यह पूर्ण विचलन की दशा है। नगरीय स्थलों में इन सभी तरह के विचलित लोगों की संख्या काफी अधिक पृथक् होती है।

रॉबर्ट मर्टन ने विचलन के चार मुख्य रूपों का उल्लेख किया है – 1. नवाचार, 2. कर्मकाण्डवादिता, 3. पलायनवाद, तथा 4. विद्रोह । नवाचार (Innovation) विचलन का वह प्रकार है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति समाज द्वारा स्वीकृत लक्ष्यों को मानता है लेकिन उन्हें प्राप्त करने के समाज द्वारा स्वीकृत साधनों की जगह व्यवहार के भिन्न तरीकों का उपयोग करने लगता है। सम्पत्ति अर्जित करने के लिए वस्तुओं में मिलावट करना या भ्रामक विज्ञापन देना इसी तरह का विचलन है। कर्मकाण्डवादिता (Ritualism) विचलन का वह रूप है जिसमें व्यक्ति किसी विशेष नियम या साधन का पालन केवल लकीर पीटने के रूप में करता है । वह यह नहीं देखता कि इससे समाज के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त किया जा रहा है अथवा नहीं। विभिन्न कुरीतियों का पालन करना इसी तरह का विचलन है। पलायनवाद (Retreatism) विचलन का वह रूप है जिसके अन्तर्गत विभिन्न निराशाओं के कारण व्यक्ति समाज द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और साधनों दोनों के प्रति उदासीन रहता है। मादक द्रव्यों का सेवन करना, अनैतिक व्यवहार करना तथा साधुवेश में मूल्यवान लक्ष्यों का उल्लंघन करना इस तरह के विचलन के उदाहरण हैं। विद्रोह (Rebellion) विचलन की वह दशा है जिसके अन्तर्गत कुछ लोगों का उद्देश्य समाज में नए लक्ष्यों और उन्हें प्राप्त करने के लिए नए साधनों को अपने हितों के अनुसार उपयोग में लाना होता है।

विचलन के इन सभी प्रकारों से स्पष्ट होता है कि विचलन का सम्बन्ध एक विशेष तरह की सामाजिक संरचना से है। सामाजिक संरचना से सम्बन्धित विभिन्न दशाएं ही व्यक्ति पर इस तरह का दबाव डालती हैं जिसके फलस्वरूप वह समाज द्वारा स्वीकृत मानदण्डों से भिन्न प्रकार का व्यवहार करने लगता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि विचलन का सम्बन्ध एक विशेष समाज की संस्कृति से है। विभिन्न सांस्कृतिक विशेषताओं वाले समाजों में व्यवहार के नियम अथवा मानदण्ड एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। भारत में नैतिक जीवन से सम्वन्धित जिस व्यवहार को हम विचलन मानते हैं उसे अमेरिका अथवा इटली के मानदण्डों के अनुसार एक सामान्य व्यवहार के रूप में देखा जा सकता है । विचलन की अवधारणा इस अर्थ में परिवर्तनशील होती है कि समय की मांग के अनुसार सामाजिक मानदण्डों में परिवर्तन होते रहने के कारण विचलित व्यवहार का अर्थ भी बदल जाता है। उदाहरण के लिए, भारत में कुछ समय पहले तक छुआछूत एक सामान्य आचरण था जबकि आज इसे एक विचलित व्यवहार के रूप में देखा जाता है। इसी कारण विचलन को एक तुलनात्मक दशा कहा जाता है।

विचलन की व्याख्या के उपागम

विभिन्न विद्वानों ने अनेक उपागमों अथवा दृष्टिकोणों के आधार पर सामाजिक विचलन के कारणों की व्याख्या की है। कुछ समय पहले तक जैविकीय उपागम के आधार पर लम्बोसो (Lombroso) के इस विचार को काफी महत्व मिलता रहा कि अनेक व्यक्तियों में जन्म से ही कुछ ऐसे जैविकीय लक्षण होते हैं जिनके कारण व्यक्ति को विचलित

Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

व्यवहार करने की प्रेरणा मिलती है । आज इस उपागम को कोई महत्व नहीं दिया जाता । व्यवहारिक रूप से विचलित व्यवहार के मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय उपागम ही अधिक महत्वपूर्ण हैं।

मनोवैज्ञानिक उपागम (Phychological Approach) व्यक्ति के शारीरिक लक्षणों की में उसकी मानसिक विशेषताओं को अधिक महत्व देता है। इसके अनुसार सामाजिक विचलन का मुख्य कारण व्यक्ति कुछ ऐसे मानसिक दोष होना है जिनके प्रभाव से व्यक्ति जल्दी ही समाज द्वारा मान्यता प्राप्त व्यवहारों से भिन्न व्यवहार करने लगता है । फ्रायड ने इद, इगो और सुपरइगो की दशा को व्यक्ति के विवेक से जोड़ते हुए विचलित व्यवहारों की विवेचना की । यह उपागम विचलित व्यवहारों को व्यक्ति की विभिन्न निराशाओं का परिणाम मानता है।

समाजशास्त्रीय उपागम (Sociological Approach) के अन्तर्गत मर्टन, सदरलैण्ड, हावर्ड वेकर तथा क्विने के विचार तुलनात्मक रूप से अधिक महत्वपूर्ण है। मर्टन ने विचलित व्यवहारों को प्रतिमानता के सिद्धान्त (Theory of Anomie) के आधार पर स्पष्ट किया। आपके अनुसार सांस्कृतिक रूप से निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जब समाज की संरचना व्यक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है तो समाज में व्यवहार सम्बन्धी नए मूल्य विकसित होने लगते हैं। इससे उत्पन्न होने वाले तनाव ही विचलित व्यवहारों को प्रोत्साहन देते हैं। सदरलैण्ड ने विभेदक साहचर्य - सिद्धान्त (Differential Association Theory) के आधार पर यह स्पष्ट किया कि जो व्यक्ति अपराधी संस्कृति वाले लोगों या गिरोहों के साथ जितने अधिक समय तक तथा जितनी घनिष्ठता के साथ रहता है, उसमें विचलित व्यवहार की सम्भावना उतनी ही अधिक बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए, नगर की गन्दी बस्तियों में व्यवहार सम्बन्धी ऐसे बहुत से मूल्य और प्रतिमान पाए जाते हैं जो समाज द्वारा स्वीकृत प्रतिमानों से भिन्न होते हैं। फलस्वरूप गन्दी बस्तियों की उप-संस्कृति अपराध, हिंसा तथा नैतिक पतन जैसे विचलित व्यवहारों को प्रोत्साहन देती है। हावर्ड बेकर ने लेवलिंग उपागम (Labelling Approach) अथवा नामवादी उपागम के द्वारा यह स्पष्ट किया कि जब किसी व्यक्ति पर एक शरावी, जुआरी, चोर, तस्कर जैसे शब्द का लेविल या ठप्पा लग जाता है तो ऐसा व्यक्ति स्वाभाविक रूप से विचलित व्यवहार की ओर आगे बढ़ने लगता है। क्विने ने इस तथ्य पर बल दिया कि जो समूह अधिक शक्तिशाली होता है वह अपने से कमजोर अथवा अपने अधीन रहने वाले व्यक्तियों या समूह के व्यवहारों को विचलित दिशा की ओर ले जाने लगता है।

वास्तविकता यह है कि नगरीय स्थलों में सामाजिक विचलन को केवल कुछ सिद्धान्तों के सन्दर्भ में ही नहीं समझा जा सकता। दूसरी सामाजिक घटनाओं की तरह विचलित व्यवहार भी कुछ प्रमुख सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दशाओं का परिणाम होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आरम्भिक जीवन से ही बच्चे का समुचित समाजीकरण नहीं हो पाता अथवा उसकी शिक्षा दोषपूर्ण होती है तो वह समाज के नियमों का उल्लंघन करके अपने उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयत्न करने लगता है। इसके अतिरिक्त यदि समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों का उल्लंघन करने पर लोगों को समुचित दण्ड न मिले तो सामाजिक स्वीकृतियां (Social Sanctions) दुर्बल हो जाने से विचलित व्यवहारों में वृद्धि होने लगती है। कानूनों को प्रभावपूर्ण ढंग से लागू न करने की दशा भी विचलित

व्यवहारों को बढ़ाती है। अनेक समाजों में जब परिवर्तन की गति बहुत तेज होती है तो सामाजिक मानदण्डों में भ्रम की दशा उत्पन्न होने से भी विचलित व्यवहारों को प्रोत्साहन मिलने लगता है। प्रत्येक समाज में सामाजिक नियन्त्रण स्थापित करने का कार्य पुलिस और कानूनों के द्वारा किया जाता है। यदि पुलिस तथा न्यायालयों में भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति बढ़ जाए तो विचलित व्यवहारों में वृद्धि होने लगती है। पारसन्स का यहां तक मानना है कि अपने अपराधी समूह स्वयं में इतने संगठित और शक्तिशाली होते हैं कि एक बार उनसे जुड़ जाने के बाद व्यक्ति अपने आपको विचलित व्यवहार से अलग नहीं रख पाता। इसका तात्पर्य है कि नगरीय स्थलों में विचलन की दशा को समझने के लिए विभिन्न कारकों के संयुक्त प्रभाव को ध्यान में रखना आवश्यक है।

नगरीय स्थलों में विचलन के मुख्य प्रकार

यदि हम विचलित व्यवहारों का कोई वर्गीकरण करना चाहें तो ऐसी सूची बहुत लम्बी हो सकती है। विचलित व्यवहार में हम उन सभी व्यवहारों को सम्मिलित करते हैं जो किसी राज्य के कानूनों, सामाजिक मानदण्डों तथा नैतिक मूल्यों के विरुद्ध होते हैं। बहुत से विचलित व्यवहार ऐसे हैं जो नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्रों अथवा सरल और जटिल समाजों में समान रूप से देखने को मिलते हैं। यदि हम केवल नगरीय क्षेत्रों से ही सम्बन्धित विचलित व्यवहारों की प्रकृति को समझना चाहें, तो इन्हें नगर की विशेष संस्कृति तथा पर्यावरण के सन्दर्भ में ही समझना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक विचलन के कुछ मुख्य प्रकारों को संक्षेप में निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है—

(1) अपराध (Crime)- मॉरर (Mowrer) ने लिखा है, "अपराध कोई भी वह कार्य है जिससे प्रचलित कानून का उल्लंघन होता है।" सामाजिक आधार पर डॉ. हेकरवाल ने लिखा है, " अपराध का तात्पर्य व्यक्ति के किसी भी ऐसे व्यवहार से है जो मानवीय सम्बन्धों की उस व्यवस्था में बाधा डालता है जिसे समाज अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक समझता है।" नगरीय क्षेत्रों में कानूनों तथा सामाजिक मानदण्डों का उल्लंघन एक प्रमुख समस्या का रूप लेता जा रहा है। कुछ समय पहले तक अधिकांश अपराध चोरी, डकैती और तक ही सीमित थे लेकिन जैसे-जैसे नगरों में भौतिकतावादी संस्कृति में वृद्धि होने लगी, अपराध के रूप में विचलित व्यवहारों ने एक नया रूप लेना आरम्भ कर दिया। नगरों में जमीनों पर अवैध कब्जे, जाली नोटों की छपाई, तस्करी, नकली और मिलावटी वस्तुओं के उत्पादन, आयकर की चोरी तथा महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराध तेजी से बढ़ने जा रहे हैं। नई प्रौद्योगिकी तथा कम्प्यूटर का प्रचलन बढ़ने से साइवर अपराधी ने एक गम्भीर रूप ले लिया है। नगरीय मूल्यों में इतना अधिक बिखराव पैदा हुआ है कि चिकित्सकों द्वारा मानव अंगों की तस्करी भी नगरीय जीवन की एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है। कानून के द्वारा कोई भी व्यक्ति 14 वर्ष से कम के बच्चे को काम पर नहीं लगा सकता लेकिन नगरीय क्षेत्रों में आज लगभग 2 करोड़ बच्चे ऐसे हैं जो खतरनाक उद्योगों, कारखानों और वर्कशापों में काम कर रहे हैं। इस तरह के सभी अपराध ऐसे संगठित गिरोहों से सम्बन्धित होते हैं जिन पर प्रभावपूर्ण नियन्त्रण लगाना पुलिस और प्रशासन के लिए भी कठिन हो जाता है।

(2) बाल अपराध (Juvenile Delinquency) - भारत में 7 वर्ष से 16 वर्ष तक की आयु के लड़कों तथा 7 से 18 वर्ष तक की आयु की लड़कियों द्वारा किए जाने वाले कानून विरोधी कार्य को बाल अपराध माना जाता है। इस आयु वर्ग के बच्चों द्वारा विभिन्न अपराधी व्यवहारों के बाद भी उन्हें या तो चेतावनी देकर छोड़ दिया जाता है अथवा सामान्य अपराधियों की तुलना में बहुत कम दण्ड दिया जाता है। किसी भी दशा में बाल अपराधी को मृत्यु दण्ड या आजीवन कारावास की सजा नहीं दी जा सकती। यही वे दशाएं हैं जिनके फलस्वरूप आज नगरों में वाल अपराधों की संख्या में बहुत तेजी से वृद्धि होने लगी है। अनेक अपराधी गिरोह विभिन्न प्रकार के अपराधों के लिए बच्चों का इसलिए उपयोग करते हैं जिससे वे अपराध की गम्भीरता से वच सकें । नगरों में माता और पिता दोनों के द्वारा नौकरी करने अथवा बच्चों के समाजीकरण पर अधिक ध्यान न देने के कारण बच्चों पर परिवार का अधिक नियन्त्रण नहीं रह जाता। बुरी संगति से सम्पन्न वर्ग के परिवारों में भी बच्चों के जीवन में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कुछ समय पहले तक बाल अपराध का सम्वन्ध सामान्य अपराधों जैसे—जेव काटने, चोरी करने, मामूली तस्करी करने अथवा जुआ खेलने तक ही सीमित था। आज नगरीय पर्यावरण में नैतिक मूल्य कमजोर पड़ जाने के कारण बहुत से किशोर यौन अपराधों में लिप्त होते जा रहे हैं। सार्वजनिक स्थानों पर अश्लीलता का सबसे अधिक प्रदर्शन किशोरों द्वारा ही किया जाता है। कुछ समय से महिलाओं के गले और कानों से सोने के आभूषणों की लूट एक सामान्य घटना वनती जा रही है । किशोर आयु के बच्चों में मादक द्रव्यों के पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति बढ़ी । इस तरह के अपराधों में मध्यम वर्ग के किशोरों की बढ़ती हुई संख्या चिन्ता का विषय है। मुख्य बात कि बाल अपराध केवल लड़कों तक ही सीमित नहीं हैं। सामाजिक और नैतिक मर्यादाएं कमजोर होने के कारण अब अवयस्क लड़कियों द्वारा किए जाने वाले अपराधों में भी तेजी से वृद्धि होने लगी है। नगरीय पर्यावरण में या तो लड़कों और लड़कियों के यौनिक विचलन को एक सामान्य व्यवहार के रूप में देखा जाने लगा है अथवा उनके द्वारा की जाने वाली तोड़-फोड़ या अव्यवस्था को युवा सक्रियता के नाम पर दवा दिया जाता है।

(3) नगरीय हिंसा (Urban Violence) — हिंसा वह दशा है जिसमें किसी व्यक्ति या समूह अपनी शक्ति का अनुचित तथा गैर-कानूनी ढंग से प्रयोग किया जाता है। हिंसा की दशा किसी को शारीरिक या आर्थिक क्षति पहुंचाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि किसी का उत्पीड़न करना या उसमें भय की भावना पैदा करना भी हिंसा का एक विशेष रूप है। नगरीय हिंसा की प्रकृति एक बड़ी सीमा तक नगर की भौतिक पारिस्थितिकी से सम्बन्धित है। नगरों में विभिन्न धर्मों, विश्वासों, क्षेत्रों तथा एक-दूसरे से भिन्न जीवन-शैली वाले लोग साथ-साथ रहते हैं। लोगों के बीच औपचारिक सम्बन्ध होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति अपने हितों को ही प्रधानता देता है। आत्म नियन्त्रण को जीवन में महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। इन दशाओं के बीच नगरीय हिंसा को मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में देखा जा सकता है—संरचनात्मक हिंसा, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा तथा स्वयं के विरुद्ध हिंसा। नगरीय संरचना गुमनामिता पर आधारित होती है जिसमें कोई व्यक्ति दूसरे को नहीं जानता । फलस्वरूप व्यक्ति हिंसा और शक्ति के द्वारा गैर-कानूनी रूप से आर्थिक लाभ पाने का प्रयत्न करने लगते हैं। इस संरचनात्मक हिंसा का एक विशेष रूप अन्तर्जातीय

हिंसा के रूप में भी सामने आया है। महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा नगरीय क्षेत्रों की एक प्रमुख समस्या है। इस तरह की हिंसा महिलाओं के अपहरण, बलात्कार, सार्वजनिक स्थानों पर छेड़छाड़, दहेज या किसी दूसरे मामले को लेकर किए जाने वाले उत्पीड़न आदि के रूप में देखने को मिलती है। स्वयं के विरुद्ध हिंसा नगरीय हिंसा का वह रूप है जिसमें व्यक्ति तरह-तरह के मानसिक तनावों, पारिवारिक विघटन से उत्पन्न दशाओं या दोपपूर्ण संगति के कारण स्वयं अपने जीवन को खतरे में डालने लगता है। नगर की मलिन बस्तियों में चरस, स्मैक और दूसरे मादक पदार्थों का सेचन करना स्वयं के विरुद्ध होने वाली हिंसा का मुख्य उदाहरण है। आत्महत्या इस तरह की हिंसा का चरम रूप है। ऐसा अनुमान है कि भारत के नगरीय क्षेत्रों में प्रतिवर्ष 70 हजार से भी अधिक लोग आत्महत्या करते हैं। नगरों में युवकों और युवतियों द्वारा की जाने वाली स्वयं के विरुद्ध हिंसा का एक प्रमुख कारण अधकचरे रोमांस की असफलता है जो नगरीय जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही है ।

(4) राजनीतिक भ्रष्टाचार (Political Corruption) – नगरीय स्थलों में विचलन का एक मुख्य रूप सार्वजनिक जीवन में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के रूप में देखा जा सकता है। विचलन के इस रूप का सम्बन्ध वर्तमान युग में विकसित होने वाले चरित्र के उस संकट से है जिसके अन्तर्गत नैतिक मूल्यों की जगह विभिन्न प्रकार के भौतिक लाभ प्राप्त करने के लिए अधिकांश राजनीतिज्ञ उद्योगपति, व्यवसायी तथा अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग करके एक-दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ में लगे हुए हैं। इस दृष्टिकोण से व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने निर्धारित कर्तव्य की जानबूझकर उपेक्षा करना तथा पद के दुरुपयोग के द्वारा अधिक-से-अधिक भौतिक लाभ प्राप्त करना ही भ्रष्टाचार है। ऐसे विचलन का मूल स्रोत राजनीतिक भ्रष्टाचार है जिसका अनुकरण धीरे-धीरे अधिकारीतन्त्र तथा समाज के दूसरे वर्गों द्वारा भी किया जाने लगता है। वर्तमान स्थिति यह है कि राजनीति एक ऐसे उद्योग का रूप लेने लगी है जिसके माध्यम से लोग अधिक-से-अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकें। इसका स्पष्ट प्रमाण सन् 2009 से 2014 तक की लोकसभा के 171 उन निर्वाचित प्रतिनिधियों के रूप में देखने को मिलता है जिनके ऊपर अपहरण, हत्या, तस्करी, धोखाधड़ी, सार्वजनिक सम्पत्ति पर कब्जे तथा डकैती जैसे गम्भीर अपराध पंजीकृत थे। कमोवेश रूप में अधिकांश राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों में भी विचलन का यह रूप स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विभिन्न स्तरों पर कितने ही अपराधी जेल की सलाखों के पीछे रहते हुए अपने बाहुवली समर्थकों की सहायता से चुनाव जीत लेते हैं। जब राजनीतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ने लगता है तब सरकार में इतना नैतिक साहस नहीं रह जाता कि अपने या दूसरे राजनीतिक दलों के नेताओं को दण्डित करके उनके भ्रष्टाचार को रोका जा सके। नगर सदैव से ही राजनीति का मुख्य केन्द्र रहे हैं। इस कारण राजनीतिक भ्रष्टाचार को नगरीय विचलन का ही एक प्रमुख रूप माना जाता है।

(5) साम्प्रदायिक तनाव (Communal Tensions) – संसार के सभी नगर एक विभिन्नतायुक्त संस्कृति के केन्द्र होते हैं। इसके बाद भी जहां संसार के दूसरे देशों में समान राष्ट्रीय कानून तथा राष्ट्रवाद के द्वारा धार्मिक आधार पर होने वाले विचलन पर नियन्त्रण रखा जाता है, वहीं भारत की स्थिति इससे बहुत भिन्न है । भारत में संसार के

सभी धर्मों के लोग साथ-साथ रहते हैं लेकिन सिद्धान्तहीन राजनीति के कारण लगभग सभी राजनीतिक दलों का यह प्रयत्न रहता है कि विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच पारस्परिक अविश्वास को बढ़ाकर अपने लिए एक पृथक वोट बैंक बनाया जा सके। इसी का परिणाम है कि नगरीय स्थलों में साम्प्रदायिक तनाव के रूप में होने वाले विचलन में लगातार वृद्धि होने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। इस तरह का विचलन केवल आन्तरिक दशाओं का ही परिणाम नहीं है बल्कि अनेक विदेशी शक्तियां भी अपनी कूटनीति के द्वारा ऐसे विचलन को बढ़ाने का प्रयत्न करती रहती हैं। इसका सबसे स्पष्ट रूप सन् 1980 के दशक में भारत के एक पड़ोसी देश द्वारा सिक्खों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काकर अकाली दल द्वारा एक स्वायत्तशासी पंजाब की मांग के लिए हिंसात्मक आन्दोलन की प्रेरणा देना था। सन् 1984 तक इससे उत्पन्न होने वाला साम्प्रदायिक तनाव चरम सीमा पर पहुंच गया जिसका परिणाम अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में 'ऑपरेशन ब्लूस्टार' के रूप में सामने आया। साम्प्रदायिक तनाव के फलस्वरूप नगरों में ही जन-जीवन को भारी हानि होती है। इस तरह के तनाव विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच ही नहीं होते बल्कि एक धर्म से सम्वन्धित विभिन्न सम्प्रदायों के बीच भी देखने को मिलते हैं। मुसलमानों में शिया और सुन्नियों के बीच, सिक्खों में अकालियों और निरंकारियों के बीच तथा हिन्दुओं में वैष्णवों और शाक्तों के बीच होने वाले तनाव विचलन की विभिन्न अभिव्यक्तियां हैं।

(6) श्वेतवसन अपराध **(White Collar Crimes)** – नगरों की भौतिकतावादी संस्कृति में विचलन का एक मुख्य रूप श्वेतवसन अपराधों में होने वाली वृद्धि है। श्वेतवसन अपराध समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला वह समाज -विरोधी कार्य है जिसे व्यक्ति द्वारा अपने पेशे या पद की आड़ में आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। घूसखोरी, बड़े स्तर की जालसाजी, कालाबाजारी, तस्करी, राष्ट्रीय महत्व के अभिलेखों की चोरी, ढोंगी सन्त और बाबाओं द्वारा जनसाधारण के धन की लूट तथा अनैतिक व्यापार का संचालन आदि श्वेतवसन अपराध के कुछ उदाहरण हैं । नगरों में आज ऐसी मनोवृत्तियां बहुत तेजी से विकसित हो रही हैं कि 'धन अर्जित करना आवश्यक है, चाहे इसे किसी भी तरह प्राप्त किया जाए', 'धन के द्वारा ही सभी तरह के सांसारिक सुख प्राप्त किए जा सकते हैं' अथवा यह कि 'धन का संचय ही व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आधार है' आदि। ऐसी मनोवृत्तियां उन मूल्यों को प्रभावपूर्ण बनाने लगती हैं जो पूरी तरह अतार्किक और व्यक्तिवादी होते हैं । नगरों में जब एक बार श्वेतवसन अपराधों की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है तब ऊपर से नीचे तक प्रत्येक वह व्यक्ति अधिक-से-अधिक साधन संचित करने में लग जाता है जिसे इसका अवसर मिल जाता है। धन का संचय एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसकी कोई सीमा नहीं होती। यही कारण है कि वर्तमान दशाओं में श्वेतवसन अपराध सार्वजनिक सम्पत्ति की लूट का सबसे मुख्श कारण बन गए हैं। समाचार-पत्रों में अब इस तरह के समाचारों को सामान्य घटना के रूप में देखा जाने लगा है कि किस राजनीतिज्ञ अथवा अधिकारी के पास कितने हजार करोड़ ₹ की अवैध सम्पत्ति पायी गयी। मध्य प्रदेश में नगर विकास प्राधिकरण के एक चपरासी के घर से लगभग 28 करोड़ ₹ की अवैध सम्पत्ति का

पाया जाना अब लोगों को आश्चर्यचकित नहीं करता। नगरीय संस्कृति में होने वाले इसी विचलन का परिणाम है कि हमारे देश में अब काले धन की एक समानान्तर अर्थव्यवस्था विकसित होने लगी है ।

(7) नैतिक मूल्यों में विचलन (Deviance in Moral Values) – यह सच है कि विचलन का प्रत्येक रूप नैतिकता के उल्लंघन से सम्बन्धित होता है, लेकिन नगरीय क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों में होने वाले विचलन की समस्या उस अधकचरी आधुनिकता से जुड़ी हुई है जो हमारे सम्पूर्ण समाजिक और सांस्कृतिक जीवन को विषाक्त कर रही है। सॉरोकिन ने इस दसा को आधुनिक संस्कृति की भोगवादी शक्तिहीनता कहा है जिसमें व्यक्ति नैतिक मूल्यों को भूलकर सांसारिक सुखों के पीछे पागल है। इसे हम पूरी दुनिया में उभर रहा एक व्यापक सांस्कृतिक संकट भी कह सकते हैं।

भारत की जिस संस्कृति को एक लम्बे समय तक आध्यात्मिक संस्कृति के रूप में देखा जाता रहा, वह पश्चिमी संस्कृति की आयातित दशाओं के कारण पूरी तरह दिशाहीन होती जा रही है। पश्चिमी संस्कृति ने भौतिक मूल्यों तथा वैयक्तिक स्वतन्त्रता के भोंडे रूप को प्रोत्साहन देकर भारत की युवा पीढ़ी में एक ऐसा विचलन पैदा किया है जिसकी कुछ समय पहले तक कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। संचार के वर्तमान युग में जब विभिन्न टी.वी. चैनलों को जनसाधारण के लिए किसी भी तरह के कार्यक्रम और धारावाहिक दिखाने की छूट मिल गयी तव एक काल्पनिक जीवन शैली की चाहत समाज के मध्यम वर्ग का आदर्श बनने लगी । विभिन्न धारावाहिक युवा वर्ग को यह प्रेरणा देने लगे कि वैयक्तिक स्वतन्त्रता का तात्पर्य अधिक-से-अधिक भौतिक सुख प्राप्त करना है। विज्ञापनों की दुनिया ने इस धारणा को बल देना आरम्भ कर दिया कि फैशनेविल वेशभूषा, सौन्दर्य प्रसाधानों के उपयोग और स्वयं को 'हॉट' दिखाकर ही वे दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं।

युवा पीढ़ी स्वभाव से ही स्वतन्त्र होती है, लेकिन जब उसे अपनी इच्छाओं के अनुरूप शैक्षिक, कामकाजी तथा कानूनी माहौल भी मिल जाता है तब व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के प्रति उसके नजरिए में तेजी से परिवर्तन होने लगता है। वैयक्तिक स्वतन्त्रता के नाम पर आज हमारे समाज में विवाह से पूर्व या विवाह के पश्चात् स्थापित यौन सम्बन्धों को नैतिक मूल्यों के विचलन के रूप में नहीं देखा जाता। आज एक ओर हमारी जीवन-शैली को बदलने वाले तरह-तरह के उत्पाद बाजार में बहुतायत से उपलब्ध हैं तो दूसरी ओर 'डेटिंग' तथा विषम लिंग के व्यक्तियों से घनिष्ठ सम्बन्धों की स्थापना को किसी खतरे के रूप में न देखकर आधुनिकता के एक लक्षण के रूप में देखा जाने लगा है। इसका सबसे विघटनकारी रूप किसी पुरुष एवं महिला द्वारा बिना विवाह किए लम्बे समय तक पति-पत्नी की तरह जीवन व्यतीत करना है जिसे हम 'लिव इन रिलेशन' का नाम देने लगे हैं। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता आज धर्म और परिवार की मान्यताओं को दरकिनार करते हुए किसी भी ऐसे सम्बन्ध को आपत्तिजनक नहीं समझती जिससे व्यक्ति को अस्थायी सुख मिल सकता है । विषम स्थिति तब पैदा होने लगती हैं जब विवाह से पहले प्रेम के दौरान किया जाने वाला पूर्ण समर्पण विवाह के बाद पैदा होने वाली नई-नई मांगों के आगे कमजोर पड़ने लगता है । इसी दशा में त्याग और शालीनता की जगह पति-पत्नी के जीवन में आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला

आरम्भ हो जाता है जिसकी आखिरी मंजिल विवाह विच्छेद के रूप में हमारे सामने आती है। इसी सन्दर्भ में मुम्बई के समाजशास्त्री मारीबाला ने नैतिक मूल्यों में होने वाले पतन को आज विवाह विच्छेद का सबसे बड़ा कारण माना है। हमारे देश के मेट्रो नगरों जैसे— दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई, हैदरावाद तथा बेंगलुरु में तलाक का प्रतिशत 30 से 40 तक पहुंच जाना इस दशा का सबसे बड़ा प्रमाण है। पश्चिमी आधुनिकता से प्रभावित युवकों और युवतियों का क्लवों, डांस घरों तथा जिम केन्द्रों में जाना आम बात है। कामकाजी महिलाओं तथा गृहणियों का अपनी तथाकथित व्यस्तताओं के कारण घर लौटने का कोई निश्चित समय नहीं होता । नैतिक मूल्यों में विचलन का एक अन्य रूप समलिंगी स्त्रियों और पुरुषों के द्वारा विवाह की मांग करना है। अनेक पाखण्डी समाजशास्त्री भी इस मांग के औचित्य को स्पष्ट करके अपनी कुत्सित मानसिकता का परिचय देने लगे हैं, लेकिन पश्चिम के अनेक देशों की तरह यदि भारत में भी ऐसी मांग को स्वीकार कर लिया जाता है तो इससे होने वाली नैतिक असुरक्षा की कल्पना करना भी कठिन है। आज मीडिया द्वारा सेलेब्रेटीस से जुड़ी काल्पनिक गॉसिप नगरों की जीवन-शैली का अभिन्न हिस्सा बनने लगी हैं जिसके अनुकरण से मध्यम वर्ग की युवा पीढ़ी के नैतिक मूल्य विखर रहे हैं।

सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि पश्चिम के बहुत से बुद्धिजीवी नैतिक मूल्यों में होने वाले विचलन से सम्वन्धित आधुनिकता का जहां व्यापक विरोध करने लगे हैं, वहीं हम आज भी उस आधुनिकता को ग्रहण करने में लगे हुए हैं जो हमारे वैयक्तिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के लिए सबसे अधिक घातक है। संसार के सबसे प्रख्यात समाजशास्त्री एंथोनी गिडेन्स ने पश्चिम की आधुनिकता की तुलना एक जुगरनॉट (Juggernaut) से की है। उनके शब्दों में जुगरनॉट तेजी से दौड़ता हुआ शक्तिशाली इंजन वाला एक ऐसा वाहन है जो कभी भी अनियन्त्रित होकर अपने मार्ग से भटक सकता है। स्वाभाविक है कि इस पर सवार लोगों का जीवन किसी भी रूप में सुरक्षित नहीं रहता । यदि एक वार यह अपने रास्ते से भटक जाए तो इसके खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। स्पष्ट है कि जो आधुनिकता नैतिक मूल्यों के विचलन को प्रोत्साहन देती हो, उसका सम्बन्ध एक ऐसी जोखिम भरी संस्कृति से है जिसे अपनाकर हम स्वयं ही अपने जीवन के सामने एक बड़ा संकट पैदा करने लगते हैं।

(8) सामान्य विचलित व्यवहार (General Deviant Behaviours) – नगरवासियों में विचलित व्यवहारों के सामान्य रूपों का सम्बन्ध नागरिक प्रशिक्षण तथा नागरिक दायित्वों के प्रति उदासीनता है । इस तरह के विचलित व्यवहार नगरीय जीवन से सम्बन्धित विभिन्न कानूनों और मार्यादाओं के उल्लंघन के रूप में देखने को मिलते हैं। घर के बाहर तथा सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा-कचरा फेंकना, सार्वजनिक या खाली पड़े हुए स्थानों पर अतिक्रमण करना, अपने आवास के आगे सार्वजनिक सड़क पर फैन्सिंग लगाकर वाहनों के गुजरने में बाधा पैदा करना तथा किसी प्रचार के लिए दूसरे लोगों के आवास की दीवारों पर पोस्टर लगाना इसी तरह का विचलन है। सरकारी कार्यालयों तथा सार्वजनिक स्थानों के किसी हिस्से पर गुटखा या पान की पीक करना, नगर के खाली स्थानों और रेलमार्ग के दोनों ओर शौच करना किसी आयोजन के अवसर पर तेज आवाज में डी. जे. पर गाना-बजाना, सार्वजनिक

सड़कों के किनारे लघुशंका से गन्दगी फैलाना तथा पार्कों को गन्दा करना भी नगरीय स्थलों से सम्बन्धित विचलित व्यवहार हैं।

यह सच है कि नगरीय स्थलों में विभिन्न प्रकार के विचलित व्यवहारों के लिए प्रशासन भी जिम्मेदार होता है, लेकिन इसका सबसे अधिक सम्बन्ध एक ऐसी नगरीय मानसिकता से है जो पूरी तरह दिशाहीन होता है।

नगरीय विचलन के कारण

अनेक लेखकों ने नगरीय स्थालों में विचलन की दशा को कुछ सिद्धान्तों के आधार पर स्पष्ट किया है। सामाजिक विघटन का सिद्धान्त यह मानता है कि नगरों में अधिक जनसंख्या तथा अति-नगरीकरण की दशा विचलित व्यवहारों का कारण है जबकि मर्टन ने अप्रतिमानता अथवा नियमहीनता (anomie) के आधार पर नगर में विचलित व्यवहारों की विवेचना की है। वास्तविकता यह है कि नगरीय स्थलों में विचलन के लिए अनेक दशाएं उत्तरदायी हैं

(1) नगरों की गुमनामिता (Anonymity of Cities) — नगरों में जनसंख्या की अधिकता तथा भीड़ से भरे पर्यावरण में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन गुमनाम होता है। यहां तक कि एक ही इमारत में रहने वाले पड़ोसी एक-दूसरे को नहीं जानते। सभी लोगों के बीच सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विभिन्नताएं होने के कारण यह गुमनामिता और अधिक बढ़ जाती है । इस दशा में प्रत्येक व्यक्ति इस बात से आश्वस्त रहता है कि उसके विचलित व्यवहार से किसी का कोई सरोकार नहीं है तथा कानूनों का उल्लंघन करके भी वह आपको इस भीड़ भरी जिन्दगी में आसानी से छिपा सकता है।

(2) सांस्कृतिक शून्यता (Cultural Vacuum) – मानवीय व्यवहारों को नियन्त्रित करने में सांस्कृतिक आदर्श नियमों जैसे— प्रथाओं, परम्पराओं, जनरीतियों तथा नैतिक नियमों का विशेष योगदान होता है। नगर में विभिन्न व्यक्तियों के विचारों, मूल्यों तथा रीति-रिवाजों में इतनी अधिक भिन्नता होती है कि उनके बीच मिश्रण हो जाने से सांस्कृतिक शून्यता की दशा पैदा हो जाती है। फलस्वरूप लोगों का जीवन उन कानूनों के द्वारा ही नियन्त्रित हो पाता है जिनकी स्वीकृतियां स्वयं बहुत दूर्वल होती हैं। अधिकांश श्वेतवसन अपराध तथा भ्रष्टाचार इसी दशा का परिणाम होते हैं।

(3) अलगाववाद की प्रवृत्ति (Tendency of Alienation) — अलगाव एक ऐसी सामाजिक और मानसिक दशा है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति एक विशेष समाज में अपने आपको अकेला, पृथक् और पराया महसूस करने लगता है। नगरों में द्वितीयक और अवैयक्तिक सम्बन्धों की प्रधानता होने के कारण लोगों की यह धारणा बनने लगती है कि वे जिस व्यवस्था में रह रहे हैं, उससे वे पृथक् है तथा उसमें वे स्वयं किसी तरह का सुधार नहीं कर सकते। असमर्थता और शक्तिहीनता की यह प्रवृत्ति उन्हें पलायनवादी बना देती है । इसके फलस्वरूप उन व्यक्तिवादी व्यवहारों को प्रोत्साहन मिलने लगता है जो नगरीय विचलन से समम्बन्धित होते हैं।

(4) परिवार के नियन्त्रण में कमी (Lack of Family Control) – नगरीय जनसख्या में ऐसे व्यक्तियों की संख्या भी बहुत अधिक होती है जो अपने परिवार से पृथक् एकाकी जीवन व्यतीत करते हैं। स्वाभाविक है कि उन पर

Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

परिवार का कोई नियन्त्रण नहीं रहता । अक्सर व्यक्ति को अपने परिवार में मिलने वाली शिक्षा भी इतनी दोषपूर्ण होती है कि वह समाज के नियमों का उल्लंघन करके अपने निजी स्वार्थों को अधिक महत्वपूर्ण मानने लगता है। नगरीय संस्कृति में परिवार के वृद्ध सदस्यों की अपेक्षा की प्रवृत्ति होने से भी विचलित व्यवहारों को प्रोत्साहन मिलने लगता है।

(5) आर्थिक असमानताएं (Economic Inequalities) - नगर ऐसे स्थल हैं जिनमें विभिन्न वर्गों के बीच की आर्थिक असमानताएं अपनी चरम सीमा पर होती हैं। एक ओर नगरों का वह धनाढ्य वर्ग है जिसमें प्रत्येक इच्छित वस्तु पर अधिकार करने की क्षमता होती है तो दूसरी ओर नगर में वे लोग भी निवास करते हैं जो कूड़े-कचरे से कुछ बीनकर किसी तरह अपना पेट भरते हैं। इनके बीच समाज का वह मध्यम वर्ग जो अपनी आय से केवल सामान्य आवश्यकताएं पूरी कर पाता है, लेकिन बाहरी तौर पर वह अपने आपको सम्पन्न दिखाने का प्रयत्न करता है। प्रत्येक वर्ग के लिए अपने से अधिक अच्छी स्थिति वाला वर्ग अनुकरण का आदर्श होता है। इन दशाओं के बीच धनाढ्य वर्ग अपनी उच्च प्रस्थिति की आड़ में श्वेतवसन अपराधों की ओर बढ़ने लगता है जबकि मध्यम और निम्न वर्ग के बहुत से लोग विचलित व्यवहारों के द्वारा आजीविका के अतिरिक्त साधन पाने का प्रयत्न करने लगते हैं।

(6) राजनीति का अपराधीकरण (Criminalization of Politics) — लोकतान्त्रिक व्यवस्था में जहां अनेक गुण हैं. वहीं इसका सबसे बड़ा दोप प्रत्यक्ष मतदान पर आधारित राजनीतिक संरचना है। इसके अन्तर्गत शिक्षित और निरक्षर, अपराधी तथा गैर- अपराधी तथा अच्छे और बुरे सभी लोगों को मतदान का अधिकार होता है। भारत जैसे देश में नगरीय जनसंख्या अनेक जातियों, उप-जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों, विचारधाराओं और परस्पर विरोधी गुटों में बंटी होने के कारण सभी राजनीतिक दलों से सम्बन्धित प्रत्याशियों का एकमात्र उद्देश्य चुनाव में जीतना होता है, इसके लिए चाहे किसी भी साधन का उपयोग किया जाए। अपना एक अलग वोट बैंक बनाने के लिए जब राजनेता ही अपराधी व्यवहारों का सहारा लेने लगते हैं तो उनका यह दायित्व हो जाता है कि वे अपने समर्थकों द्वारा किए जाने वाले अपराधी व्यवहारों के लिए भी उन्हें दण्डित होने से बचाते रहें । नगरों में यह दशा विचलित व्यवहारों का एक बड़ा कारण सिद्ध हुई है।

(7) प्रशासनिक उदासीनता (Administrative Indifference) — व्यावहारिक रूप से यह देखा गया क प्रशासन के लिए उत्तरदायी बड़े-बड़े अधिकारी सामाजिक विचलन से सम्बन्धित व्यवहारों पर नियन्त्रण लगाने में अधिक रुचि नहीं लेते क्योंकि इससे उन्हें कोई आर्थक लाभ प्राप्त नहीं होता। इसके विपरीत बड़े-बड़े गिरोहों का विरोध करने से उन्हीं के जीवन में असुरक्षा की सम्भावना पैदा हो जाती है। सभी जानते हैं कि माफिया गिरोहों के साथ या तो पुलिस के अवैध सम्बन्ध होते हैं अथवा स्वयं प्रशासनिक तन्त्र में इतनी शक्ति नहीं होती कि बड़े-बड़े अपराधी संगठनों पर नियन्त्रण स्थापित किया जा सके। साधारणतया प्रशासनिक अधिकारी उन निर्माण कार्यों में अपना अधिक समय व्यतीत करते हैं जिनसे उन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी तरह का लाभ प्राप्त हो सके।

(8) उपभोक्तावाद में वृद्धि (Increase in Consumerism) — नगरों की वर्तमान भौतिकवादी संस्कृति में अधिकांश व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्बन्धित विभिन्न वस्तुओं जैसे - एअर कन्डीशनर, फ्रिज, टेलीविजन के नए मॉडल, मंहगे मोबाइल, माइक्रोवेव तथा सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करना अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक समझने लगे हैं, यद्यपि इनके लिए उनके पास पर्याप्त आर्थिक साधन नहीं होते । इस दशा में व्यक्ति बैंकों या दूसरे वित्तीय संगठनों से ऋण लेकर इन आवश्यकताओं को पूरा करने लगते हैं। एक बार परिवार जब ऐसे ऋणों के आर्थिक बोझ से दब जाता है तो किसी विशेष विचलित व्यवहार अथवा भ्रष्ट तरीकों से उन पर अतिरिक्त आर्थिक साधनों को प्राप्त करने का दबाव बढ़ने लगता है।

(9) अपराधी गिरोहों के संगठन (Criminal Organizations) - पारसन्स का कथन है कि सामान्य जीवन में जिन व्यवहारों को विचलित व्यवहार कहा जाता है, उन्हें अपराधी संगठन व्यवहार का सामान्य रूप मानते हैं। इन संगठनों से जुड़े हुए सभी लोग एक-दूसरे के प्रति बहुत बफादार होते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपराधी संगठन के विरुद्ध कार्य करता है तो अपराधी संगठन अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उसे दबाने का प्रयत्न करने लगते हैं । अपराधी गिरोहों के सदस्य भी एक बार इनसे सम्बद्ध हो जाने के बाद कभी इनसे बाहर नहीं निकल सकते। इससे विचलित व्यवहार एक संगठित रूप लेने लगते हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त दशाओं के अतिरिक्त विचलित व्यवहार के सामाजिक संरचना तथा सामाजिक संस्थाओं से सम्बन्धित अनेक दूसरे कारण भी हैं लेकिन इनका प्रभाव उतना आन्तरिक नहीं होता जितना प्रभाव उपर्युक्त दशाओं के फलस्वरूप व्यक्ति के व्यवहारों पर पड़ता है। वास्तविकता यह है कि विचलित व्यवहार किसी भी समाज की व्यवस्था तथा आन्तरिक सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा होते हैं। इसी कारण समाजशास्त्रियों ने नगरीय स्थलों में विचलित व्यवहारों को कम करने के लिए विभिन्न उपाए बताए हैं। डॉ. एम. जे. सेथना ने यह सुझाव दिया है कि बच्चे की किशोरावस्था के दौरान ही उसे शिक्षा के माध्यम से उन नैतिक व्यवहारों का प्रशिक्षण दिया जाए जो एक स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक हैं । लोकतान्त्रिक समाजों में राजनीतिक संरचना का सार्वजनिक जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है । इस दशा में राजनेताओं के लिए एक ऐसी नैतिक संहिता विकसित करना आवश्यक है जिससे बाहर जाकर वे अपराध की राजनीति से दूर रह सकें। आज राष्ट्रवाद की वात करना एक पिछड़ापन माना जाने लगा है लेकिन यह सच है कि जनसाधारण में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किए विना भ्रष्टाचार से सम्बन्धित अपराधों को नहीं रोका जा सकता। देश की आर्थिक व्यवस्था में इस तरह सुधार लाना भी आवश्यक है कि जिससे विभिन्न वर्गों की आर्थिक असमानताओं को कम किया जा सके। इसके लिए आरक्षण तथा निम्न आर्थिक वर्गों को आर्थिक सहायता देना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना की रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने तथा लोगों में श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने से व्यक्तियों में अपनी व्यवस्था और देश के प्रति विश्वास पैदा किया जा सकता है। भारत एक बहुजन समाज है जिसमें विभिन्न धर्मों, जातियों और क्षेत्रों के व्यक्ति साथ-साथ रहते हैं । इस दशा

में कानून द्वारा प्रत्येक ऐसे व्यवहार पर नियन्त्रण रखना आवश्यक है जिससे जातिवाद, क्षेत्रवाद या सम्प्रदायवाद को प्रोत्साहन मिलता हो। इसके बाद भी जब तक राजनीतिक तथा प्रशासनिक भ्रष्टाचार को समाप्त नहीं किया जाता तब तक नगरीय क्षेत्रों में बढ़ते हुए विचलन की समस्या को दूर करना सम्भव नहीं है।

विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि नगरों में विभिन्न प्रकार की विरोधपूर्ण दशाओं से उत्पन्न होने वाले विचलित व्यवहार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आधुनिक नगरों के लिए एक बड़ी चुनौती है। कुछ समय पहले तक यह समझा जाता था कि सामाजिक भेदभाव तथा अवसरों की असमानता नगर में विचलित व्यवहारों का मूल कारण है। आज नगरीय स्थलों में विचलन के विश्लेषण के लिए एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है। समाजशास्त्रियों का विचार है कि वर्तमान युग में नगरीय विचलन को समझने के लिए समाज के निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाइयों तथा मलिन वस्तियों के पर्यावरण की तुलना में उस राजनीतिक संस्कृति पर विचार करना अधिक आवश्यक है जो धीरे-धीरे नगरीय विचलन का मूल कारण बनती जा रही है । भारत में अल्पसंख्यक समुदायों को वहुसंख्यक समुदायों की तुलना में भी अधिक सुरक्षा मिलने के कारण विचलन की विवेचना धार्मिक आधार पर नहीं की जा सकती। वर्तमान दशाओं के सन्दर्भ में स्टरलिंग क्लेरी का यह विचार बहुत सही प्रतीत होता है कि नगरीय जीवन को पारस्परिक विरोध, हिंसा और दूसरी तरह के विचलित व्यवहारों से बचाने के लिए बदलते हुए मूल्यों के साथ विदेशों की कूटनीतिक गतिविधियों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. H. Johnson, *Sociology*,
2. M.B. Clinard, *Sociology of Deviant Behaviour.*
3. Horton and Hunt, *Sociology*,
4. Erich Goode – Deviant Behavior,
5. Robert J. Franzese – The Sociology of Deviance : Difference, Tradition and Stigma
6. G.K Agrwal : Indroducing Sub-Sociologies,
7. Marshall Clinard & Robert Meier : Sociology of Deviant Behavior,
8. Ali Wardak : Social Control And Deviance